

राहुल सांकृत्यायन का कथा साहित्य

राहुल सांकृत्यायन का कथा साहित्य

[कुश्न विन्विद्यालय की पी एच० डी०
उपाधि के लिए स्वीकृत शोध प्रबंध]

लेखक
डॉ० प्रभाशकर मिश्र
एम० ए० पी एच० डी०

प्रकाशक



अशोक प्रकाशन
नई सड़क, दिल्ली ६

प्रवागव
घ ठेरु प्रकाशव
नई सठव ि ली ।

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन है ।

प्रथम संस्करण १९६७

मू य १५ ००

मुद्रक
जनता प्रेस
आगरा ।

भूमिका

हिंदी जगत में महापण्डित राहुल साह्यायन का पत्तित्व विशेष महत्व रखता है। वे अतिप्रतिभूत धर्म शक्ति एवं असाधारण प्रतिभा के प्रतीक हैं। उनकी मानव जीवन में असाधारण है। मानव-जीवन को सुखमय समृद्ध तथा पूण बनाने के हेतु वे सदैव प्रयत्नशील रहे हैं। उनका जीवन प्रयोगवादी रहा है। उह दूसरो द्वारा निश्चित माग पर चलकर सतोप नहीं हुआ। सत्या वेधण उनके जीवन का लक्ष्य रहा है। राजनीति, धर्म एवं सामाज्य जीवन से सम्बद्ध विभिन्न क्षेत्रो में उहोने अनेक प्रयोग किये हैं। काग्र स कायकर्ता के रूप में उहोने अपना राजनीतिक जीवन अरम्भ किया था। श्तीय सोवियत यात्रा (सन् १९३८ ई०) के उपरांत वहा के साम्यवादी जीवन से प्रभावित हो वे साम्यवादी बने और अत तक साम्यवादा रहे। उनका विचार था कि साम्यवाद ही एक ऐसा माग है जिसका अनुसरण दीनो और धर्मको को दुःखमय जीवन से मुक्त करा सकता है। उहोने किसी वाद का अघा नुकरण नहीं किया। जब किसी वाद के खोलपेन को लक्षित किया उहोने एक नवीन स्वतंत्र माग खोज निकाला। धर्म के क्षेत्र में व वणव स आयसमाजी तदुपरांत बौद्ध और अतत अनीश्वरवादी बने। उहोने वैज्ञानिक भौतिकवाद के माग को सवा मानकर स्वाकार किया। वे प्रत्येक मत की उपयोगिता को जीवन को कसौटी पर कसत थे। देश विदेश की यात्राओ ने उनकी विचारधारा को हृदि वादिता से मुक्त किया। यात्राओ ने राहुल जी की धर्म विषयक धारणाओ राजनीतिक विचारो और साहित्यिक मायताओ को प्रभावित किया था।

राहुल जी का जीवन, सरल एवं आडम्बरमुक्त रहा है। अविरल काम उनके जीवन का परम मनोरथ रहा है। आलस्य एवं प्रमाद से वरुध। उनकी रचनायें उनके असाधारण पुरुष ध, दृढ मनोबल एवं अनुगासित कायप्रणाली का परिणाम है। राहुल जी की प्रतिभा सवतोमुखी थी। उहोने हिंदी ससृष्ट एवं ति बती मापाओ में रचनायें की। हिंदी में उहोने उपयास कहानी यात्रा जीवनी सम्भरण, देश दर्शन विज्ञान, इतिहास, राजनीति तथा अग्न सम्बंधी विषयो पर पर्याप्त मात्रा

में लिखा। साहित्य की जिस विधा में उन्हें रचनाओं का प्रभाव पड़ा, उसी पर उन्होंने काम कर लिया। प्राचीन ग्रंथों से नवीन ग्रंथों का सामंजस्य स्थापित करने के लिए राहुल जी ने एतिहासिक उपन्यासों की रचना की। मानव प्रकृति की प्रत्येक निधि को सरल क्लृप्तियों के रूप में प्रस्तुत करते कहानी परम्परा को उन्होंने साहित्य की परम सामाजिक पदवाया। वो गाँव गंगा की कहानियों के रूप में मानव विश्वास की भाँकी राहुल जी की हिन्दी साहित्य को अनुभव देते हैं। देश विदेश की यात्राओं तथा भारतीय राजनीति में व्यस्त रहने पर भी उन्होंने हिन्दी साहित्य को जिस षोडश घोर परिमाण में रचनाएँ दी हैं उन्हें देखकर विस्मित होना स्वाभाविक है।

राहुल जी की कला के छोर इतने विस्तीर्ण हैं कि एक साथ उस पर विचार करना कठिन है। साहित्यिक विधाओं एवं भावपूर्ण की दृष्टि से राहुल जी की रचनाओं में अधिक विविधता होने के कारण उन सबका एक साथ अध्ययन असाध्य है। प्रस्तुत ग्रंथ प्रबंध में राहुल जी के रचनात्मक कथा साहित्य को आलोचना का विषय बनाया गया है। उनके कथा साहित्य में मानव जीवन के अनेक युग सिमट जाते हैं। उन्होंने इतिहास के चोखटे में मानव की शाश्वत समस्याओं एवं भावनाओं को ऐसे अनुभव रूप में प्रस्तुत किया है कि वे अतीत की भाँकी एवं वर्तमान की निधि हैं। उनके कथा साहित्य में एक दशक पयटन के जीवन अनुभव तथा कुशल इतिहासकार की आस्था अभिव्यक्त हुई है। उन्होंने अपने उपन्यासों एवं कहानियों के माध्यम द्वारा भारत के प्राचीन इतिहास में साम्यवादी विचारधारा तथा गणतंत्र शासन प्रणाली के तत्त्व खोजने का प्रयत्न किया है।

प्रस्तुत ग्रंथ प्रबंध का विवेच्य विषय राहुल जी के कथा साहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन है। इस विषय पर विधिवत आलोचनात्मक अध्ययन का अब तक नितांत अभाव रहा है। गत वर्षों में इस विषय से सम्बद्ध टीका टिप्पणियाँ आलोचना ग्रंथों तथा पत्र पत्रिकाओं में देखने में आई हैं किन्तु उनमें विश्लेषणात्मक अध्ययन की प्रेरणा भावना का पुट अधिक है। इस दृष्टि से कथा तत्त्वों के आधार पर राहुल जी के उपन्यासों एवं कहानियों का प्रस्तुत विश्लेषण तथा उनकी उपन्यास एवं कहानी कला के विकास का निर्देश काय लेखक की ओर से मौलिक प्रयास है।

लेखक न विभिन्न माध्यम विज्ञान द्वारा प्रतिपादित कथा साहित्य सम्बन्धी सिद्धांतों एवं तत्त्वों की कसौटी पर राहुल जी के उपन्यासों एवं कहानियों को परखने का प्रयत्न किया है। प्रस्तुत प्रबंध को सात अध्यायों में विभाजित किया गया है। प्रथम तीन अध्यायों में, क्रमशः राहुल जी के व्यक्तित्व उनकी रचनाओं तथा कथा

साहित्य के स्वरूप का निरूपण करते हुए उनके उपयामों एवं कहानिया का वर्गीकरण किया गया है। चतुर्थ अध्याय में राहुल जी के उपयामों तथा पंचम अध्याय में उनकी कहानियों का—कथावस्तु, पात्र चरित्र चित्रण कथोपकथन तथा जीवन दशन मुख्य कथा तत्त्वों की दृष्टि में विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। राहुल जी की कथा-कृतियों में, कथोपकथन भाषा एवं लेखन शक्ति के तत्त्व प्रायः समान हैं। पुनरावृत्ति तथा विस्तार भय के कारण इन कथा तत्त्वों की दृष्टि से राहुल जी के उपयामों एवं कहानियों का विवरण एक साथ एक अध्याय में किया गया है। अध्यायों के अंत में विश्लेषण के फलस्वरूप उपलब्ध निष्कर्षों का उल्लेख किया गया है। राहुल जी के मौलिक चिंतन तथा उनकी रचना में कला के विकास का परिचय उनकी मौलिक कथा कृतियों से ही प्राप्त हो सकता था अतः उनकी मौलिक कथा कृतियों को ही प्रस्तुत शोध काय का विषय बनाया गया है अतः अनुदित को नहीं।

प्रस्तुत शोध प्रबंध के प्रथम अध्याय, 'महापण्डित राहुल साह्यायन का व्यक्तित्व'—में राहुल जी के व्यक्तित्व की पृष्ठभूमि में सवष्ट परिस्थितियों एवं प्रवृत्तियों का विवरण है। अध्याय के आरम्भ में, उनके बाल्य तथा पारिवारिक जीवन का अंकन है। तत्पश्चात् उनके धुमकंडी जीवन तथा उनकी धार्मिक एवं राजनीतिक गतिविधियों का चित्रण है। अध्याय के अंत में राहुल जी के साहित्य की अनुप्राणित करने वाले तत्वों का विश्लेषण किया गया है।

द्वितीय अध्याय 'राहुल जी की रचनाएं तथा साहित्यिक कृतियों में राहुल जी के रचना काय की विशिष्टता का परिचय करते हुए उनकी रचनाओं से सम्बद्ध, उपलब्ध सूचियों के तुलनात्मक अध्ययन के उपरान्त उनकी द्वितीय साहित्य की परिधि में आने वाली, कृतियों की निर्धारित सूची प्रस्तुत की गई है।

तृतीय अध्याय, 'कथा साहित्य तथा राहुल जी द्वारा रचित उपयाम एवं कहानिया में कथा साहित्य तथा साहित्य के पारस्परिक सम्बंध का उल्लेख करते हुए विभिन्न विद्वानों द्वारा प्रतिपादित उपयाम एवं कहानी सम्बंधी परिभाषाओं के आधारभूत तत्वों की छान बीन कर उपयाम एवं कहानी के मौलिक स्वरूप को प्रस्तुत करने का प्रयास है। उस स्वरूप की कसौटी पर उपयाम एवं कहानी विधा के अंत में आने वाला राहुल जी की कृतियों को बस कर, उनका विभिन्न तत्वों की दृष्टि से वर्गीकरण प्रस्तुत किया गया है।

चतुर्थ अध्याय, राहुल जी के उपयामों का अध्ययन—कथावस्तु चरित्र चित्रण आतावरण एवं जीवन दशन के तत्वों की दृष्टि से—के चार उपविभाग हैं। क विभाग में राहुल जी के उपयामों की मुख्य कथा तथा शीघ्र सूत्रों का

विश्लेषणात्मक दृष्टि से सार सचय कर उनका आलोचनात्मक अध्ययन किया गया है। ऐतिहासिक उपयासों से सम्बद्ध ऐतिहासिक तथ्यों के अध्ययन के लिए ऐतिहासिक सामग्री का सचय किया गया है तथा उसके विश्लेषण से प्राप्त निष्पत्त प्रस्तुत किये गये हैं। इस विभाग के अंत में राहुल जी के उपयासों की कथा गल्प कला का विवेचन है। छ विभाग में पात्र घोर चरित्र चित्रण की दृष्टि से राहुल जी के उपयासों का विश्लेषण करने हुए भावक पात्रों आनमणकारी सामक पात्रों, अथ पुरुष पात्रों तथा मुख्य नारी पात्रों के चरित्र पर विचार किया गया है। विभाग के अंत में राहुल जी के उपयासों की पात्र चित्रणकला सम्बन्धी निष्पत्त प्रस्तुत किये गये हैं। ग विभाग में राहुल जी के उपयासों में वातावरण-सृष्टि के अंतर्गत उनके उपयासों के घटनास्थल तथा काल क्रम का विवेचन करते हुए उपयासों से सम्बद्ध राजनीतिक सामाजिक धार्मिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियाँ तथा प्राकृतिक चित्रण का स्पष्टीकरण किया गया है। घ विभाग में राहुल जी के उपयासों में जीवन-गमन के अंतर्गत उपयासों में प्रकृत उनकी जीवन सम्बन्धी घटनाओं का विवेचन करते हुए, उनके विभिन्न उपयासों के उद्देश्य पर विचार किया गया है।

पंचम अध्याय राहुल जी की कहानियों का अध्ययन—कथावस्तु चरित्र चित्रण वातावरण एवं उद्देश्य के तत्त्वों की दृष्टि से—के चार उपविभागों में से क विभाग में राहुल जी की कहानियों के कथा मूत्रों का अंकन तथा उनका विश्लेषण है। तत्पश्चात् उनकी कहानियों की कथा गल्प कला का उदघाटन है। 'ख' विभाग में चारित्रिक गुणों के आधार पर राहुल जी की कहानियाँ के वर्गीकरण के उपरांत प्रतिनिधि पात्रों के चरित्र का विश्लेषण है। निष्कप रूप में राहुल जी की कहानियों की पात्र चरित्र चित्रण कला का विवेचन है। ग विभाग में राहुल जी की कहानियों में वातावरण सृष्टि के अंतर्गत उनकी कहानियों के घटनास्थल काल क्रम तथा कहानियों से सम्बद्ध राजनीतिक सामाजिक सांस्कृतिक एवं धार्मिक परिस्थितियों तथा प्रकृति चित्रण का विश्लेषण है। घ विभाग में कहानियों में अंकित राहुल जी के जीवन सम्बन्धी दृष्टिकोण तथा उनकी कहानियों के उद्देश्य का अंकन है।

षष्ठ अध्याय राहुल जी के उपयासों तथा कहानियों का कथोपकथन भाषा एवं लेखन शैली की दृष्टि से विश्लेषण के 'क' ख ग तीन विभाग हैं। क विभाग में राहुल जी की कथोपकथन कला पर विचार है। ख विभाग में राहुल जी की भाषा के विविध रूपों की चर्चा है। ग विभाग में उपयासों एवं कहानियों में राहुल जी की लेखन शैली की प्रवृत्तियों पर विचार किया गया है।

सप्तम अध्याय 'उपसहार—राहुल जी की कथा साहित्य' में राहुल जी की उपवास एवं कहानी कला पर विचार करते हुए, हिंदी कथा-साहित्य में राहुल जी के स्थान तथा उनकी देन का उल्लेख है।

'परिनिष्ट' में श्रीमती कमला साहित्यायन से शोध काय के प्रसंग में किये गये पत्र-व्यवहार से, उनके उल्लेखनीय पत्रों को उद्धृत किया गया है। इनसे राहुल जी के व्यक्तित्व एवं उनकी रचनाओं के विषय में विशेष प्रकाश उपलब्ध होता है।

इस नम्र निवेदन को समाप्त करने से पूर्व पूज्य गुरुजनों की कृपा का उल्लेख करना लेखक अपना परम पुनीत कर्तव्य समझता है। लेखक का यह परम सीमाग्य है कि हिंदी जगत के प्रकाश विद्वान एवं पूज्य लेखक डॉ० विनय मोहन जी शर्मा, आचार्य एवं अध्यक्ष हिंदी विभाग तथा डॉ०, कला सहाय कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय का उस पर सदैव बरद हम्स रहा है। प्रस्तुत शोध काय की परिपूर्णता आचार्य जी के स्नेहपूर्ण अपरिमित आशीर्वाद का शुभ फल है। पूज्य आचार्य जी के प्रेरणापूर्ण प्रोत्साहन के निमित्त लेखक सदैव उनका ऋणी रहेगा। डॉ० पदमसिंह जी शर्मा, कमला, रीडर, हिंदी विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के बहुमूल्य सुभावों से, लेखक लाभान्वित होता रहा है। लेखक भद्रय डॉक्टर साहब के प्रति उनकी असीम कृपा दृष्टि के दृष्टु हृदय से आभार प्रकट करता है। राहुल जी के उपमाता की ऐतिहासिकता से सम्बद्ध विषयों में भद्रय डॉ० बुद्धप्रकाश जी निष्पक्ष प्राच्य विद्या संस्थान कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय की ओर से जो अमूल्य सुभाव प्राप्त हुए उनके लिये लेखक डॉक्टर साहब के प्रति कृतज्ञता प्रकट करता है। लेखक, डॉ० विद्याभूषण तनेजा प्रिंसिपल शिक्षण महाविद्यालय कुरुक्षेत्र की सद्भावनाओं एवं उनकी ओर से सहाय प्राप्त, सतत प्रोत्साहन के लिये हृदय से कृतज्ञ है। शोध काय की भवधि में श्रीमती कमला साहित्यायन की ओर से राहुल जी के व्यक्तित्व एवं उनकी रचनाओं से सम्बद्ध विषयों में जो जानकारी पत्र-व्यवहार द्वारा प्राप्त होती रही है उसके लिये लेखक हृदय से उनका आभारी है। लेखक को अपने पूज्य पिता जी (प० हरिदत्त जी मिश्र शास्त्री) की ओर से शोध काय के समय जो प्रोत्साहन एवं बहुमूल्य सुभाव प्राप्त होते रहे हैं उनके लिये जितनी हार्दिक कृतज्ञता प्रकट की जाय थोड़ी है। कृतज्ञता ज्ञापन के औपचारिक ढंगों द्वारा लेखक पूज्य पिता जी के शुभाशीर्वाद के महत्त्व को घटाना नहीं चाहता। लेखक निरज मन्त्री मंगलामिनी एवं स्नेहमयी जननी के वात्सल्यपूर्ण एवं परम पुनीत शुभाशीर्वाद के निमित्त सदैव ऋणी रहेगा।

प्रस्तुत शोध प्रबंध भद्रय डॉ० शशिभूषण जी सिंहल, प्राध्यापक, हिंदी विभाग कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय व कुशल निर्देशन में सम्पन्न हुआ है। शोध प्रबंध

की रूप रेखा से लेकर शोध काय के पूण होने तक अख्य व डॉ० साहब की घोर से जो विन्सापूण निर्देगन प्राप्त होता रहा है उससे उच्छ्रण होने में सेगक शकया असमय है। अख्य व डाक्टर साहब ने, जिस तरपरता एय स्नेह से, सेगक का पय प्रदधान किया है, उससे लिये यह सदय हृदय से वृत्तगतापूण धामार प्रकट करता रहेगा।

प्रसागान्धिष्ट देवस्य विदुषा धानुरग्नयया ।
राहुनस्य महाकीर्ते समीगा पूनिमागता ॥

लेखक

दिनांक १० ११ १९६५

विषय-सूची

प्रथम अध्याय—महापण्डित राहुल साठ्वत्यायन का व्यक्तित्व	
बालक केदार	
राहुल जी का अननेल विवाह	१७
राहुल जी 'धुमककड' क्यों बने ?	१८
राहुल जी का धुमककडी जीवन	२०
राहुल साठ्वत्यायन और घम	२३
राहुल जी और राजनीति	३०
महापण्डित राहुल साठ्वत्यायन	३६
द्वितीय अध्याय—राहुल जी की रचनाएँ तथा साहित्यिक वृत्तियाँ	४४
राहुल—बहुमुखी प्रतिभा	
राहुल जी की प्रकाशित रचनाएँ	४७
अप्रकाशित राहुल साहित्य	४८
राहुल जी की हिन्दी साहित्यिक रचनाएँ	६०
तृतीय अध्याय—कथा साहित्य तथा राहुल जी द्वारा रचित उपन्यास	६१
एक कहानियाँ	
कथा साहित्य—साहित्य का मुख्य अंग	६४
उपन्यास का स्वरूप	६४
कहानी का स्वरूप	६६
उपन्यास और कहानी	६६
उपन्यास और कहानी के तत्त्व	७०
कथावस्तु	७०
कथावस्तु के गुण	७१
चरित्र चित्रण	७१
कथोपकथन	७२
वातावरण	७३
भाषा-शैली	

उद्देश्य प्रथमा जीवन ०००	७३
उप-यातों का वर्गीकरण	७४
कहानियों का वर्गीकरण	७६
राहुल जी के उप-यात	७७
राहुल जी द्वारा रचित उप-यातों का वर्गीकरण	७९
(अ) तत्त्वों के आधार पर	७९
(ब) वण्य विषय के आधार पर	७९
राहुल जी के कहानी संग्रह	८१
राहुल जी की कहानियों का वर्गीकरण	८२
(अ) तत्त्वों के आधार पर	८२
(ब) वण्य विषय के आधार पर	८३

चतुर्थ अध्याय—राहुल जी के उप-यातों का अध्ययन

(कथावस्तु चरित्र चित्रण, वातावरण एवं जीवन-श्रमण के तत्त्वों की दृष्टि से)

(क) राहुल जी के उप-यातों का कथावस्तु की दृष्टि से विश्लेषण

जीने के लिए—कथा सूत्र	८४
कथा विश्लेषण	८५
सिंह सेनापति—कथा सूत्र	८७
कथा विश्लेषण	८८
सिंह सेनापति की ऐतिहासिकता	८९
जय धीमेय—कथा सूत्र	९२
कथा विश्लेषण	९२
जय धीमेय की ऐतिहासिकता	९३
मधुर स्वप्न—कथा सूत्र	९६
[कथा विश्लेषण	९८
मधुर स्वप्न की ऐतिहासिकता	९९
विस्मृत यात्री—कथा सूत्र	१०१
कथा विश्लेषण	१०२
विस्मृत यात्री की ऐतिहासिकता	१०३
त्रिवोदास—कथा सूत्र	१०५
कथा विश्लेषण	१०६

दिवोदास की ऐतिहासिकता	१०७
राहुल जी के उप-यासों का कथा शिल्प	१०८
राहुल जी के उप-यासों में ऐतिहासिकता का तत्त्व	१११
(ख) राहुल जी के उप-यासों में पात्र और चरित्र चित्रण	
चरित्र चित्रण	११३
चित्रण प्रणालियाँ	११४
राहुल जी के औप-यासिक पात्रों का वर्गीकरण	११६
राहुल जी के पात्रों का चरित्र चित्रण	११६
(नायक पात्र) देवराज	११६
सिंह	११८
जय	११९
शाह बवात	१२१
नरेन्द्र	१२२
दिवोदास	१२३
धार्मिक-व्यवहारी शासक पात्र	१२४
मित्र पात्र	१२६
नारी पात्र	१२९
राहुल जी के उप-यासों की पात्र चित्रण कला	१३१
(ग) राहुल जी के उप-यासों में वातावरण-भ्रष्टि	
उप-यासों के घटनास्थल	१३४
उप-यासों का कालक्रम तथा राजनीतिक अवस्था	१३५
सामाजिक अवस्था	१३६
(अ) खान पान तथा रहन सहन	१३७
(ब) धार्मिक अवस्था	१३७
(स) धार्मिक अवस्था	१३८
(द) सांस्कृतिक अवस्था	१४०
प्रकृति चित्रण	१४२
निष्कर्ष	१४५
(घ) राहुल जी के उप-यासों में जीवन दशन	
जीवन दशन	१४५
यथाय धीर धादश	१४६
राहुल जी के उप-यासों में युक्त जीवन दशन	१४७
मानव जीवन और राहुल जी	१४७
(राहुल जी के उप-यासों में) मानव-जीवन और यात्रा	
मानव-जीवन और प्रेम	
मानव और प्रेम	

सामाजिक हृदयों १५४

साम्यवाद १५५

मनतत्र १५८

राहुल जी के उपासकों का उद्देश्य १५६

पथम अध्याय—राहुल जी की कहानियाँ का अध्ययन

(कथावस्तु चरित्र चित्रण, वातावरण एवं उद्देश्य के तत्त्वों की दृष्टि से)

(क) राहुल जी की कहानियों का कथावस्तु की दृष्टि से विश्लेषण १६२

राहुल जी की वातावरण चित्रण प्रधान कहानियों के कथा सूत्र १६२

(क) 'सतमी के बच्चे' कहानी संग्रह की कहानियों के कथा सूत्र १६२

(ख) 'बोल्गा से गंगा' कहानी संग्रह की कहानियों के कथा-सूत्र १६४

चित्रण प्रधान कहानियों का कथा विश्लेषण १६८

राहुल जी की चरित्र चित्रण प्रधान कहानियों के कथा सूत्र १७२

चरित्र चित्रण प्रधान कहानियों का कथा विश्लेषण १७६

राहुल जी की कहानियों का कथा गिल्प १७७

(ख) राहुल जी की कहानियों में पात्र और चरित्र चित्रण

राहुल जी की कहानियों के पात्रों का वर्गीकरण १८१

राहुल जी की कहानियों के पात्रों का चरित्र चित्रण १८३

स्वकेंद्रित पात्र १८२

(राहुल जी के) समाज सुधारक पात्र १८३

परिस्थितियों द्वारा संचालित पात्र १८८

राहुल जी की कहानियों में पात्र चित्रण कला १९०

(ग) राहुल जी की कहानियों में वातावरण सृष्टि कहानियों के घटनास्थल १९२

कहानियों का कालक्रम तथा राजनीतिक अवस्था १९३

सामाजिक अवस्था १९४

(प्र) खान पान तथा रहन सहन १९५

(ब) धार्मिक अवस्था १९६

(स) धार्मिक स्थिति १९७

(द) सांस्कृतिक स्थिति १९७

प्रकृति चित्रण २००

निष्कर्ष २००

(घ) राहुल जी की कहानियों में उद्देश्य-सत्य मानवता का विकास और राहुल जी (राहुल जी की कहानियों में) प्रकृति का रहस्य और मानव की आस्था	२०४
मानव और धर्म	२०६
मानव जीवन और प्रेम	२०७
सामाजिक रूढ़ियाँ	२०८
साम्यवाद	२०८
गणतंत्र	२०९
राहुल जी की कहानियों का उद्देश्य	२१०
दृष्ट प्रथमाय—राहुल जी के उपन्यासों तथा कहानियों का कथोपकथन	२११
भाषा एवं लेखन शैली की दृष्टि से विश्लेषण	
(क) राहुल जी के उपन्यासों तथा कहानियों में कथोपकथन	२१४
राहुल जी के सहज कथोपकथन	२१४
कथोपकथन द्वारा विषय प्रतिपादन	२१८
सम्बन्ध कथोपकथन	२२१
राहुल जी के कथोपकथनों में नाटकीयता का अभाव	२७
राहुल जी के कथोपकथनों में भावानुरूपता का अभाव	२२८
कथोपकथनों में लोकभाषा का प्रयोग	२३०
राहुल जी के मुख्यतः पात्रों की अस्वाभाविक भाषा 'दिवोदास' उपन्यास के संवाद	२३१
निष्कर्ष	२३१
(ख) उपन्यासों एवं कहानियों में राहुल जी की भाषा	२३३
राहुल जी की भाषा का विविध रूप	
(क) सरल हिन्दी	२३४
(ख) संस्कृत तत्सम शब्दों से युक्त हिन्दी	२३४
(ग) उर्दू मिश्रित हिन्दी	२३५
फारसी शब्द	२३६
अरबी शब्द	२३७
राहुल जी की भाषा में ग्रामीण शब्दों का प्रयोग	२३८
राहुल जी की भाषा में स्वनिर्मित शब्दों का प्रयोग	२४८
राहुल जी की भाषा में अर्थहीन शब्दों का प्रयोग	२४९
राहुल जी की भाषा में व्याकरण सम्बन्धी अशुद्धियाँ	२५०

‘दिवो’नास उप-यास की भाषा	२४३
निष्कर्ष	२४४
(ग) उप-यासो एव कहानियों में राहुल जी की सत्ता गती	
राहुल जी की सत्ता गती में वणन की प्रधानता	२४७
(क) घटना चित्र में वणन की प्रधानता	२४७
(ख) पात्र चित्र में वणन की प्रधानता	२४८
(ग) वातावरण चित्र में वणन की प्रधानता	२५०
(घ) राहुल जी के भावात्मक चित्र	२५१
(ङ) राहुल जी के व्यंग्यात्मक चित्र	२५२
राहुल जी की गली में निश्चिन्ता	२५३
राहुल जी द्वारा विनोदों का प्रचुर प्रयोग	२५५
उपमाओं का प्रयोग	२५६
” मुहावरों का प्रयोग	२५७
लोकोक्तियों का प्रयोग	२५८
’ सूक्तियों का प्रयोग	२५९
निष्कर्ष	२६०
सप्तम अध्याय—उपसंहार राहुल जी का कथा साहित्य	
राहुल जी की उप-यास कला	२६२
राहुल जी की कहानी कला	२६५
हिन्दी कथा साहित्य और राहुल जी	२६८
परिशिष्ट	
परिशिष्ट १—श्रीमती कमला साहूत्यायन के कुछ पत्र	
पत्र सं० १ दिनांक २४ ७ ६३	२७१
’ २ ’ २५ ११ ६३	२७१
’ ३ ’ २५ ६ ६४	२७२
’ ४ ” १७ ८ ६५	२७३
’ ५ १८ ९ ६५	२७५
परिशिष्ट २—सहायक प्रथम सूची	
(क) श्री राहुल साहूत्यायन के कहानी संग्रह एवं उप-यास	२७७
(ख) सहायक प्रथम (हिन्दी)	२७७
(ग) सहायक द्वितीय	२७९
(घ) सहायक तृतीय पत्र पत्रिकाएँ	२७९
(ङ) सहायक प्रथम (संग्रह जी)	२८०

प्रथम अध्याय

महापण्डित राहुल साकृत्यायन का व्यक्तित्व

दासक केदार

महापण्डित राहुल साकृत्यायन का जीवन उस सहज सरिता का प्रवाह है जो सम विषम स्थलों की चिन्ता न कर स्वच्छन्द गति से अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर होती रहती है। कौन जानता था कि एक छोट से ग्राम के साधारण परिवार में जन्म लेने वाला केदार एक दिन महापण्डित की उपाधि से देश विदेशों में विख्यात होगा।

राहुल साकृत्यायन का बचपन का नाम केदारनाथ पाण्डय था। इनके पूर्वज सरयूपारीण ब्राह्मण थे। वे मचया ग्राम के रहने वाले थे जो गोरखपुर (उत्तर प्रदेश) में है। वहाँ में इनके पूर्वज आजमगढ़ (उत्तर प्रदेश) चले आये थे। चक्रपाणि नामक एक पूर्वज को उनके यजमान मेहनगार के राजा ने इक्यावन बीघा भूमि दान में दी थी। चक्रपाणि ने उस भूमि में अपने नाम पर (चक्रपाणिपुर) ग्राम बसाया जो आज भी बनमान है। परिवार बढ़ने से चक्रपाणि के वंशज कई समीपस्थ ग्रामों में फैल गये। चक्रपाणि की बुद्ध पीढियों के अनन्तर इस परिवार के इच्छापाण्डे चक्रपाणिपुर (चक्रपाणिपुर) से बनला ग्राम (जिला आजमगढ़) में आ बसे। उनके वंशज अब भी इस ग्राम में रह रहे हैं। इच्छापाण्ड की छठी पीढ़ी में केदारनाथ का जन्म हुआ।

केदारनाथ के पितामह का नाम जानकी पाण्ड और पिता का नाम गोबधन पाण्ड था। केदार के नाना का नाम रामशरण पाठक और माता का नाम श्रीमती कुलवन्ती था। कुलवन्ती अपने माता पिता की एक मात्र सत्तान थी। उस दिन विवाह हुआ जान पर वे अधिकतर अपने पिता के गांव पट्टहा में रहा करती थी। केदार का जन्म रविवार ६ अप्रैल सन् १८६३-० को नतिहाल पट्टहा (आजमगढ़) में हुआ था। पट्टहा और केदार के त्रिवृग्राम बनला के बीच दस मील का अंतर है। बनला ग्राम आजमगढ़ नगर से सोनह मील दक्षिण मुहम्मदाबाद तहसील में आजमगढ़ से तरवा धाना जाने वाली सड़क पर स्थित है। बनला ग्राम के दक्षिण में मायवती (मगढ़) नदी बग्गी है।

नाती केदार के जन्म से उनके नाना और नानी को अपार आनन्द हुआ। अपनी माँ से अलग रहने योग्य हो जाने पर केदार के नाना नानी ने उन्हें अपने पास

रस लिया। वे उगते बहुत रोह करते थे। अगली मी के अनुकरण पर बेदार अपनी नानी को भी बहा करते थे। बचपन में बेदार को शात-भूत का बहुत शय था। वह अपने सापियों के साथ हापट (देहाती हाथी) गिभी डटा, कचड़ी आदि मस मसा करते थे।

बचपन में बेदार के सुस्ते-पतल शरीर का कारण उनका नाना नानी उनका खानपान का विशेष ध्यान रखते थे। यद्यपि वे और मांस नहीं खाते थे पर अपने नानी के लिए मछली मांस का प्रयोजन करते में वे कोई संकोच न करत थे। बेदार का दान संविड थी। वे दूध दही खाह या शीरा तथा मछली एवं और लकड़ियों को रोटी खाना पसंद करते थे। बेदार के बचपन की बशभूया बसी ही थी जमी नि वहां के लोग पत्नत थे—घोती कुरता। गांव के और लकड़ों की भांति उनका निय भी जता पहनना आवश्यक था। सन १९४८ ई० में उनके पुत्र भाग्य पाणन का विवाह में पत्न पहन ग्यारह वय की आयु में कनार का निय जता तरीका गया था।^१

पढ्या नहीं तो बटना तो सीखेगा।—स उद्देश्य की रभरत के बेदार को नवम्बर सन १८९८ ई० में रानी की सराय के प्राथमरी स्कूल में पठ के लिए भेजा गया। नाना की धारणा थी कि हिंदी से उद्ग का महत्व अधिक है इसलिये बेदार को उद्ग पठाना आरम्भ कराया गया। हिंदी पठन वाले साधिया का सम्पर्क से हिंदी सीखन की ओर बेदार का ध्यान गया। सन १९०० ई० में कनार ने दर्जा दो पास कर लिया। रानी की सराय के प्राथमरी स्कूल की पढ्या समाप्त कर सन पर उनको परवरी सन १९०६ ई० में निजामाबाद का मिडिल स्कूल भेजा गया। सन १९०८ ई० में उन्होंने इस स्कूल से उद्ग मिथिल भा पास कर लिया।

अनमेल विवाह

ग्यारह वय की अवाध अवस्था में अर्थात् सन १९४८ ई० में कनार का समाज की तत्काल न कुप्रथाभा का शिकार होना पडा। उनका विवाह अहिरीत थाम (जिना आजमगढ) का एक धनी ब्राह्मण की सुंदर कन्या सतोषी से कर लिया गया।^२

^१ मरी जीवन यात्रा भाग १ पृ १४

^२ राहुल जी योन सम्बन्धों और विवाह में स्व-उदतावादी रहे हैं। (कृपया देखिये अध्याय ४) राहुल जी न दूसरा विवाह मिस ताला नाम की कृती मति सन १९७८ ई० में किया। (मी जीवन यात्रा राहुल भाग २ पृ ४५६) अब वह पत्नी अपने पुत्र गौर राहुल त्रिब साह्रवायन सहित रूप में रह रही है। तीसरा विवाह राहुल जी न धामती कमला जी से सन १९५८ ई० में किया। यह सम्बन्ध उ होन स्थायी रूप में निभाया; कमला जी अपनी दो सतानों सहित इस समय दार्जिलिंग में निवास कर रही हैं। (देखिये कमला जी का २५ ६ ६४ का पत्र परिशिष्ट)।

विवाह के समय बेदार की आधु और रुवि की ओर ध्यान नहीं दिया गया। सोपी (केदार की पत्नी) अपने पति से पांच बय बड़ी थीं। विवाह के बाद केदार साथी उन्हें बिटाने लग। कहने लगे कि तम्हें बूढ़ी स्त्री मिली है। ऐसी बातों के मन को दुख पहुँचाती थी। इसीलिए वे अपनी ननिहाल से पितृग्राम कम ही गये। आने पर वे पत्नी से न तो मिलत थे और न ही उससे बोलते थे। अपने विवाह की चर्चा करत हुये राहुल जी (बचपन के केदार) ने अपनी जीवनी बोलता है— उस वक्त ग्यारह बय की अवस्था में मेरे लिये यह तमाशा था। जब नौगरे जीवन पर विचारता हूँ तो मालूम होता है समाज के प्रति विद्रोह का अकुर करने में इतने ही पहना काम किया। केदार ने बचपन में जिसे तमाशा केदार का उस समय का पान बहुत परिमिन था तथापि वे अपनी सतक से इस विवाह को घर एक समाज द्वारा अपने प्रति किया हुआ अयाय समझते ऐसे विवाह को वे 'याय विरुद्ध मानन थे और इस बचन को तोड़ डालने के लिए ग रहे थे। इस प्रसंग में राहुल जी न लिखा है— यदि सपानो ने जिम्मवारी समझी और एक अवाय व्यक्ति को पत्रे में फसा दिया तो यह आना रखनी तक उचित है कि शिकार फने की उसी तरह पर म डाले पडा रहगा। २

साहूत्यायन जहाँ अपने आपको ऐसे विवाह पाश से मुक्त करन के पक्ष में थे उस परिणीता द्वारा स्वतंत्र माग अपनाय जाने के पक्ष में भी थे। इस ओर सवेत हुए उन्होंने लिखा है— यदि वह समझती है कि उस पर अयाय हुआ है प्रसंग से घटना लनी वह अपना रास्ता लने के लिए स्वतंत्र है। ३ पर प्ररन कि क्या ऐसे विचार प्रकट करने से राहुल जी अपनी प्रथम परिणीता के तारदायित्व से मुक्त हो सकते हैं। इस प्रश्न पर लोगो न बहुत चर्चा की है। कुछ लोगो ने राहुल जी द्वारा यम पत्नी के प्रति किय गय इस व्यवहार को अयाय समझा है। वे कहते हैं राहुल जी ने अपनी इस पत्नी के जीवन को दुखमय बनाकर कही अधिक अयाय की है। राहुल जी की करुणा या अवतार बनाया जाता है। पर उक्त घटना को हमारी इस धारणा की बड़ा धक्का लगता है। बाट में राहुल जी ने अपने पर दुख भी प्रकट किया। यहाँ पर इस सम्ब घ में एक घटना का उल्लेख निक न होगा। सन १९५८ ई० की बात है। राहुल जी ने मुना कि उनकी परिणीता बीमार होकर इलाज करवाने के लिए वाराणसी आई हुई है। वे मिलने गय। तब तब उसी घमरती अपने गाँव (आजगढ़) चनी गई थी। उनके भनीजे उष्यनारायण पाण्डय थे। राहुल जी ने पाण्डय जी से कहा—

...

मे तुम्हारी चाबी स मिलना चाहता था पर त उनसे त मिल गया । तुम्हारे पत्ना नि मी ठनके साथ तो पछ दिया यह करना पना । मभ उमरा है । यदि गहस्याग त करता ता अपने उत्सव भी पूति त कर पाता । वहने राहुल जी की आंगो स अधधारस वला गी । और तुछ न कर गये । जी ने अपन गग पाय का कारण ह्यहीनता गहा अति का प त प्रति वला है । पर उनके पनना वहने स क्या क्षतिपूति हा मानी है ? उनगी प्रणम अपने गाँव म अब तक जीविन है और उदात्त के बच्चा भोग रगे है ।

राहुल जी 'घमक्कड' क्यों बने ?

बेदारनाथ (भविष्य के राहुल) के पिता की इ । धी रि व मिश्रित के पत् पर केदार का मन बही और ही था । उहे घर का प्रथम अ म न था व घमना चाहते थ । उनका इम प्रवृत्ति के बच्चा कारण थ । उनका ताना सना म रि र्ण चक र । उहोने दक्षिण भारत की रव मर की थी और अपन मनिन जीवन्त म अफगना के सामने यथच्छ कारणनाम लिखाय थ । अब अपने जवकाशरान के विगत जीवन की कहानियाँ व-चाव स सुनाया करत र । यात्रा प्रम केदार म न कानिगो स ही अनरित हुआ था ।

बेदारनाथ के मन म यात्रा प्रम जाप्रत करन म एक अय कारण भी स था । उोने अपनी पाठय पुस्तक (मी इस्माईल की उद् की चौथी किता) नवाजिना वाजि दा की कहानी खदराँ का नतीजा पही । म कहानी म नि निवित एक शर था

सर कर दुनिया की गाफिन जिन्दगानी फिर कहा ।

जिन्गी गर कुछ रही तो नीजवानी फिर कर् ? ॥

म शर के मदेश ने बेदार के मन को यात्राप्रो के लिय प्रात्साहन रि परिस्थितियो त केदार की इम प्रवृत्ति को उक्साया । अत्यावस्था उनका प्रथम विवाह हो गया था । यह विवाह उनकी र्चि क विरुद्ध था माता का भी देनात हो चुका था । अत घर म उने अब कोई जाकपण शप केदार के नाना क अपन भतीजो के साथ जमीन सम्बन्धी भगड बसेड चल केदार का मन उन सकीण भभटों के कारण और दुखी रहने गगा । एस उमरपुर के वाबा परमत्स के पास जान लगे । बाबा परमहम भारत चके थ । वह प्रत्यक्ष शिक्षित यक्ति म वला करते थे कि दुनिया देखो । के की ओर स अयमनाक थे ही उहे वाबा परमत्स की यह बात अच्छी नगी सभी कारणो ने मिलकर केदार के घमक्कडी जीवन का सूत्रपात किया ।

आग चनकर केदार ने राहुल साहूत्यायन के र्ण म स्वय पूण घ पन जाने पर दूसरा को भी घमक्कडी के लिए प्रात्साहन किया और घमक्क

म्यान के लिए घुमनाड शास्त्र तक निख डाला। 'घुमनाड' शास्त्र और राहुल के साथ यात्रा-भ्रमों का अध्ययन करने से उन सूत्रों का पान होता है जो राहुल का घमवकनी के लिए प्ररित करत रहे थे।

जीवन और जगन सम्यगी अनुभव प्राप्ति का परम लानछा राहुल जी की त्वकनी वृत्ति का मूलाधार रही है। उन्होंने अनुभव किया कि एव ही म्यान पर रहन से मनुष्य के अनुभव सीमित हो जात हैं। तमन से मनुष्य निय नवान न प्राप्त करता है जीवन के प्रति उसका दृष्टिकोण विकसित होना है। तममें मुजब कुम्बकम की भावना जाग्रत हाठी है। भिन्न भिन्न विचारों और गम्प्रायो सम्पक में आन से विचार मण्डिणना की भावना उत्पन्न हाठी है। अपनी यात्राओं पर राहुल जी का जीवन के प्रति दृष्टिकोण भी बदला। गम्प्रायो की छाह मानवतावाणी बने। विचारमण्डिण जन।

विचार मण्डिण बनन के साथ यात्रा अनुभवों द्वारा मनुष्य कष्ट-महिा भी जाता है। उस दुगम म्याता का पार करना पचना है क्रय पशुओं का पचना होता है। कभाता सर्पों गभीं भूख प्यास वर्षा श्राधी के कारण दानी का पग पग र कटा का सामना करना पचना है। यात्रा के कटा न राहुल जी का कल दृष्टिण बना दिया था। तम रचना का व त्वगी त्वगी पार कर लत थे। तमान मुज-आराम की विषय फि ता के प्रिना व अपन माग पर बन्त रन्ते थे। उनकी कष्ट-सदृष्टिणता का परिणाम था कि वात के जीवन की तल यातनायें ह सहा बन गईं। यानी कभी जातय का अनुभव नहीं करना यह वात राहुल के जीवन में पूणतया सिद्ध होनी है। राहुल जी न न कभी यकावत अनुभव की न आनन्द्य का हा पाग पत्रवन दिया। रात हो या दिन किसी का साथ हा मा न, व घुमवकनी के लिए मन्व त्कार रहन था।

घमवकट का मन दश विन्नेन के लोगों के रहन गहन उनकी भाषा उनक और उनक रीति रिवाजों की ओर आवर्षित होता रहा है। वहाँ की प्रवृत्ति मन को रमाना है। य सभी आनपग घुमवकट को उमना रतिगत चिन्ताओं त्त प्रान करते हैं। उसम विशय प्रकार की मस्ती आ जाती है। राहुल जी म मस्ती थी। ससार की अचनें उनकी घुमवकटों में बाधा नहा डाल सक्ती था। अभिप्राय यह नी कि उहें लोगों से प्रम न। था महानुभूति नही थी। त्विक्तों से सम्बन्ध रगन पर भी व अपन आग को माट भाया से निलिण रगन था। अपने मुख मय की प्रिना न थी। न ही हूसरा के मुख दुग उहें उनक यात्रा से विचलित करत थे। यात्रा करत समय निय उनन नय व्यक्तियों से गम्प्राय थ पर उह स्त सूत्रों का व घन न मानकर व आग बन्त रहते थे। यात्रा से वे पवति का निराता मुख अनुभव करत थे। राहुल जी के विचारानुसार वराग्य से अभिप्राय यह नहा कि घुमवकट का जमभूमि से प्रम छट जाता है। वास्तव में जमभूमि के लिए प्रम पूणतया तभी

जाग्रत होता है जब व्यक्ति दूर देशों में भ्रमण करता है। तभी मातृभूमि का मनोत्पन्न चित्र उसके मानसपटल पर उभरता है। साथ ही राहुल जी का यह विचार या विधि जन्मभूमि का मोह हमारे परोक्षों को पकड़ कर हम जगमग से रमावर बनाना चाहे तो यह जीवन का उपाय नहीं है। प्रत्येक मनुष्य का अपनी मातृभूमि के प्रति एक कर्तव्य होना है जो मन में उसकी मधुर स्मृति और काय द्वारा दृष्टगता प्रकट का देने मात्र से पूरा हो जाता है। राहुल जी यद्यपि देश विदेशों की यात्रा करते रहते पर अपनी जन्मभूमि भारत को कभी नहीं भूला।

घुमक्कड़ चाहे घनी कुल में उत्पन्न हुआ या निधन घर में उगम जन्म गुणों के अतिरिक्त स्वावलम्बन का होना आवश्यक है। राहुल जी संपत्ति और धन के आश्रय को घुमक्कड़ी के माग में याचक मानते थे। उनका विचार था कि मोने चांदी के बल पर सर करन वालों को घुमक्कड़ करता हूँ इस महान शक्ति का प्रति भारी अयाय करना है। घमक्कड़ को जब घर नहीं प्रदान अपनी बुद्धि का बाहुक तथा साहस पर भरोसा रखना चाहिये। उस समय बना चाटिय कि भल नी उभरने रास्ता फलो का न हो किंतु उसे सहारा बनवाने मनुष्य प्रत्येक स्थान पर मिलेगा। मानवता के इन हाथों के सहारे ही राहुल जी जीवन भर यात्रा करते रहे। योग आश्चर्य करते हैं कि बिना किसी निश्चित आय के व उनकी उम्मीद यात्रा कैसे करते थे। राहुल जी स्वावलम्बी थे। उन्हें अपनी बुद्धि और साहस पर भरोसा था। अपने इस स्वभाव के कारण यात्राओं में उन्हें किसी प्रकार के अभाव के अनुभव न होता था। व जहाँ पहुँचते उनका स्वागत होना और आग का यात्रा के लिए समुचित प्रबंध कर लिया जाता था।

घमक्कड़ी के लिए राहुल जी निश्चितता का भी आवश्यक समझते थे। कहा करते थे कि घमक्कड़ी वही कर सकता है जो निश्चित है। पारिवारिक माया मोह या सांसारिक सुख को घमक्कड़ी के सामने ये तत्त्व समझते थे। व घमक्कड़ न बढ़ कर कोई सुख नहीं मानते थे। माता पिता के सह मूल्य को तोड़ कर घुमक्कड़ धारण करना व अनुचित नहीं मानते थे। राहुल जी ने घर के सह बंधन को तोड़ घर की सुविधाओं को छोड़ा और घमक्कड़ी धारण की। उनके पिता न तथा दूसरे व्यक्तियों ने उह बहुत समझाया यात्राओं की आपत्तियों के दर भी लिये पर राहुल जी अपने स्वल्प से कभी विचलित नहीं हुये।

घुमक्कड़ी के लिए राहुल जी जहाँ माता पिता के सह मय व धन को तोड़ डानन के पक्ष में वहाँ व पत्नी के सह बंधन एक उत्तर विद्व को स्विकार नहीं करन थे। व कहते थे कि माता पिता अपने बच्चों को घमक्कड़ बनने से राहुल के लिए और उनको के साथ उनका विवाह अल्पायु में कर देते हैं। व काय को राहुल जी अयाय समझते थे। व कहते थे कि इस अवस्था में वों को फेंकने का प्रत्येक व्यक्ति को अधिकार है। ऐसे विवाह-बंधन में पस कर घुमक्कड़ यन्त्रि अपनी मिथ्या परिणीता को छोड़ता है तो वह घर और संपत्ति को लौट

अपने साथ नहीं ले जाता। यदि लकड़ी घाने न लडके को न देल कवल घर की ही देख कर विवाह किया है तो घर वही विद्यमान है वह उडकी रह वहाँ पर। राहुल जी का यह निजी अनुभव भी था उन्हें आपायु म ऐसे 'बधन म डाला गया था। पर उहोन इस विवाह-भम्बघ को कभी स्वीकार नहीं किया। उन्होंने सदा अपने को इस बधन से मुक्त समझा और निश्चित होकर घुमकड़ी की।

राहुल जी न घुमकड़ी को सबसे बड़ा धम बताया है। उनका कहना है कि ससार म यदि कोई सनातन धम है तो घुमकड़ी। सप्टि की नीव ही घुमकड़ी पर आधारित है। आदिम पुरप यदि एक स्थान पर नदी या तालाब के किनारे धम मुल्क म पडे त्त तो व दुनिया को आग नही ल जा सकत थे। शकर को शकर किसी ऋषि ने नहीं बनाया उ ह उडा बनान वाला था यही घुमकड़ी धम। बुद्धधम को जन्म दन बाल महात्मा बुद्ध एक महान घुमकड़ी थे। जन धम क प्रतिष्ठापक महावीर भी घुमकड़ी थे। सिक्ख मत के सस्थापक गुरुनानक अपन समय क महान धमकूड थे। स्वामी दयानन्द को ऋषि स्थान द किसन बनाया ? इसी घुमकड़ी धम ने। प्रभु ईसा भी घुमकड़ी थे। इस प्रकार राहुल जी ने धमकड़ी को मध से बड़ा धम सिद्ध किया है। घुमकड़ी हाना व आदमी के लिये परम सौभाग्य की बात मानते थे। राहुल जा ने सभी धर्मों स ऊपर घुमकड़ी धम को माना था। इस धम को उहोन जीवना त तक नही छोडा।^१

धमकड़ी को सर्वश्रेष्ठ विभक्ति बतान के साथ साथ राहुल जी तरुण तरुणिया का उपदेश दन हुए कहते हैं— दुनिया में मानुष जन्म एक ही बार होता है और जबानो भा कवल एक ही बार आतो है। साहसी और मनस्वी तरुण तरुणियों को हम अवसर म हाथ नहा घोटा चाहिय। कमर बाध लो भायी धमकड़ो ममार तुम्हारे स्वागत क लिय बकरार है।^२

राहुल जी का घुमकड़ी जीवन

जिस घुमकड़ी का राहुल जी ने उपदेश किया है वह उन जस साहसि एव प्रतिभाशाली धक्ति द्वारा ही अपनाई जा सकती है। यह केवल उही क लिये सम्भव था कि समाज को समस्याओं के प्रति पूणतया जागरूक रहत त्त भी व निश्चित घुमकड़ी बन सके। राहुल जी जिस काय म लगत थ पूणतया दत्तचित्त होकर नगने थ। तभी घुमकड़ी उनके लिय अनुपम निधि जन सकी। घुमकड़ी स उन्हें देश विदेशो म ग्याति मिली, जीवन और जगत के अनुभव प्राप्त हुए तथा साहित्यिक कामों के लिए दुर्लभ सामग्री हस्तगत हुई। इसी ने उन्हें पुरातत्ववेत्ता और इतिहासकार बनाया। बौद्ध धम के महत्वपूर्ण ग्रंथो और तातपोधियों की राज,

^१ 'घुमकड़ी शास्त्र के प्रथम द्वितीय चतुथ सप्तम अथम तथा षच अथम अध्याया के आधार पर।

^२ घुमकड़ी शास्त्र, पृ० ११

उनकी घुमनकभी का ही परिणाम है। इस घुमनकभी में राहुल जी ने अपना जीवन का अधिकांश भाग व्यतीत किया।

घर से भागना राहुल जी ने सन् १९०७ ई० में ही आरम्भ कर लिया था। पर उनकी नियमित यात्राओं का आरम्भ सन् १९१० ई० से मानना चाहिए जबकि उन्होंने उत्तराखण्ड की यात्रा की। सन् १९१० ई० में सन् १९२१ ई० तक की अवधि में उन्होंने भारत के विभिन्न स्थानों की यात्रा की। इस यात्रा में वे पूरे में कस्तूरबा उ्तर पश्चिम में नागौर और दक्षिण में बंगलौर तक घूम विभिन्न तीर्थों और नगरों का यात्रा की।

१. राहुल जी की मुख्य यात्राओं का विवरण इस प्रकार है— १. प्रथम बार सन् १९०७ में राहुल—(उस समय के बंदारनाथ)—घर से भागकर बनारस पहुँचे। पर परसा की कमी के कारण घर वापस आ गए।
२. सन् १९१० ई० में केदारनाथ उत्तराखण्ड का जाकर जान का निश्चय किया। पहली दो उठानों में परस हुए कि उनको बिना घूमने को पशु समझने थे। एक बार बराह्य का सबन उनके साथ था। बनारस के शहर हरिद्वार पहुँचे। वहाँ से उन्होंने केदारनाथ तथा बन्दीनाथ की यात्रा की। सन् १९१० ई० में केदारनाथ में त लछमननाथ के पास परसा हुए में आ गए। उनका एक भव बराही साथ बना दिया गया और उनका नाम राम उदारदास रखा गया। पर सरवृत्त के अध्ययन का कार्य प्रबंधन करने में उत्तर परसा के जीवन में पीछे छूट गए। साथ ही मर कर दुनिया की गाँवों में जिन्दगी फिर वहाँ — ब्रह्म शक्ति उनके मन में चकराने का रूप था। परिणामतः रामउदार परसा से भाग निकले। रामउदार नाम त जी से सम्बन्ध और मनास प्रस्ताव के तीर्थों के विषय में मनु रखा था। पर त मनास पहुँचे। फिर तिम्बल तिम्बली तिम्बली बाना जी काचीपुर रामउदारम आदि दक्षिण भारत की तीर्थों की यात्रा की। त पश्चात् बंगलौर दम्ब और अहमदाबाद गए। महत्त जी ने उद्धार शरीर वापस बुना दिया और राम उदार परसा वापस आ गए।
४. परसा में समय नष्ट करने की अपेक्षा राहुल जी ने मर जाना जल्दा समझा। जसा या म तीन मास (सन् १९१८ ई० जुना में सितम्बर तक) रहें। उनके बिना जी रहे फिर वापस आये।
५. रामउदार के नाना की मृत्यु उम समय ही गई थी जब रामउदार मनास के तीर्थों का यात्रा कर रहे थे। नाना की मृत्यु के बाद रामउदार को घर पर अर्थ को आकषण में जिम्मा देता था। प्रयाग का भ्रम देवने के ब्रह्मण परस माय निकले। वहाँ से आगरा पहुँचे और जाय मुसाफिर विद्वानय के विद्यार्थी बन। सन् १९१५ ई० में आगरा की पढ़ाई समाप्त कर सन् १९१६ ई० में मस्वुत का उच्च शिक्षा के लिए नाहीर पहुँचे।
६. भाई माह्व मन्शप्रसाद आय मुसाफिर आगरा में रामउदार के गुरु रहे थे। अब वे भी मौनवी आश्रम तथा म नाहीर में रहे थे। उन्होंने परामना दिया कि विभिन्न मिशनरी नगर करने के लिए और उसके लिए चला इकट्ठा

सन १८७१ ई० स उनका विधवा-यात्रा का आरम्भ होता है। व प्रथम बार सन् १९०३ ई० म नेपाल गय सन १९२७ २० म प्रथम बार लका यात्रा की। बाद म लका स २६ इतना प्रेम हो गया कि वहा की तीन बार और यात्रा की तथा वहाँ पचास समय तक टहर। लका म व बौद्ध धर्म म प्रभावित हुए और बौद्ध मिथ

वरन के त्रिपु बृद्ध स्थाना का यात्रा बन्नी चाहिये। एत सम्बन्ध म रामउत्तार न सन १९१७ १८ ई० म यशत्रानगर स्थाना बानपुर नगनज हरदा प्रतापगढ अरुंग मणपुरा, भाँमी आदि स्थानो का यात्रा की। पर एत स्थाना की मिथिना व कारण मिशनरी नयाग बन्ने का प्रयास बन् वरना पना।

७ सन १९१९ २० म उ होन विधान और उमक आम पाम व पना की यात्रा की।

८ महात्मा बुद्ध व प्रति धृढा उत्पन्न एत व कारण उत्तान बुद्ध के जीवन म सम्प्रचित स्थाना की यात्रा वरन का निश्चय किया। अत सन् १८५० २० म तुम्बिनी (बुद्ध का जन्मस्थान) वपिलवस्तु माथा कुअर (निवाण स्थान) सारनाथ, नासाल घोषगया की यात्रा की।

९ उनका ध्यान पन्ना की आर स अभी हटा नपी था। व वान्त और मीमांसा पन्ना चात्त व। इसी उद्देश्य को लेकर स्वामी परिप्रपन्नचाय के पास तिर मिशी (दक्षिण) पहुँच। वहाँ रहते हुए अपना यात्रा राय जारी रखा। सन १९०१ ई० म रामउत्तार न गगनीर भमूर और कुग प्राप्त की यात्रा का।

१० म गांधी व बन्ने हुए प्रभाव के कारण रामउत्तार का ध्या राजनीति की और गया पर कुग को व एकदम छोड भी न सक्त व। पिता जी की मृत्यु का समाचार पावर के कुग स दूरी लकर चो और मीय छतरा पहुँच और काग्र स म प्रविष्ट हो गय। सन १९२१ २० से ७ २० तक के काल में व राजनीति म सक्रिय भाग लने रह। सत्याग्रह किय और जन म भी गये। अत इस काल में व नियमित रूप म यात्रा न कर सक। फिर भा सन १९ २० (माघ ५५५) म एक मास क त्रिय के नेपाल गय और सन १८ २० म पञ्जाब और मीमा प्राप्त का भ्रमण करत हुये काश्मीर पन्। श्रीनगर लहाय पश्चिमी निम्न और बुशहर रिपामन की यात्रा की।

११ काग्रम क सामो उस समय काई विन्ने कायक्रम न रूप बोल धम को आर आवृत्त होने के कारण उत्तान नका जाने का निश्चय किया। मन्स हान हुये १५ मई सन १९ ७ ३० का सान (नका) पहुँच। नका क विद्या नकार विहार म पठन पाठन का काम वरन लग। तथा म १८ मास (१३ मई १९०७ से १ दिसम्बर १९०८ ई० तक) रहे। वहाँ बौद्ध धर्म और पानी पाया क सम्बन्ध म पर्याप्त ज्ञान प्राप्त किया।

१२ १ दिसम्बर सन १८२८ ३० को रामउत्तार नका स भारत क लिए रवाना हुय। गांधी बीशाम्बी कमथा (कुशीनगर) आदि बौद्ध स्थाना की यात्रा करत हुय छररा पहुँच।

१३ बौद्ध धर्म के श्रेयो की प्राप्ति क लिय रामउत्तार म निवृत्त जान का निश्चय किया। गुप्त रूप स नेपाल पार करत हुय १९ जुलाई सन १९०९ ई० को के

बन गए। बौद्ध धर्म के प्रचार की शीघ्र और सरसम्पन्धी जागरणी प्राण बनने के लिए वे तिन बन गए। माण की कठिनाइयों से ये सभी हनोत्साह नहीं हुए। राहुन जी ने तिब्बत की चार बार यात्रा की। तिब्बत यात्राओं को ये सभी गनिबर और माभप्र मानते थे।

तिब्बत की राजधानी ल्हासा पत्थ। वहाँ उन्होंने निवृत्त भाषा और बौद्ध धर्म के प्रचार का सर्व अध्ययन किया। तथा सा माय हुए तीन हजार श्रमों में से प्राय दो हजार की तात्पौरियाँ तथा चित्रपट गरी। इन सभी शीघ्रा की वायकर १७ १८ श्रमों पर कनिम पो के लिए खाना किया और २४ अप्रैल १९३० ई० को रामउत्तर नामा म भारत के नियत खाना हुए। मन्म होते हुए २ जन १८ ई० को व फिर नका पत्थ।

१४ नका पढ़वने पर २२ जून सन १८ ई० का रामउत्तर की प्रश्रया (गाता) हुई और उह बौद्ध भिन् सध म नियमानुसार सम्मिलित कर लिया गया। जब तक व रामउत्तर स्वामा के नाम से प्रसिद्ध व किन्तु अब आरव्यकना हुई नये नाम की। उहोन स्वय ही रामउत्तर के प्रथमापर ग का साम्य देने हुए अपने लिए राहुन नाम का प्रस्ताव किया और वट स्वीकृत भी हो गया। शीघ्र साय जो जान के कारण अब व राहुन साहित्यायन के नाम से सम्प्रोचित किया जान गे। भारत म चन २२ सत्याग्रह म उ आकषित किया और राजनीति म भाग नन के विचार स १५ सितम्बर सन १९०० ई० का उहाने भारत म पुन पत्थापण किया।

१५ कायस का अविशगन ९ म १ माच (१८ ९ ई०) तक करांची म जाने को था। उसमें भाग नने के लिए राहुन साहित्यायन कराधा पत्थे। वापसी म मोहन जोशी और श्रमणा होने हुए व लात्तोर पत्थ। वहाँ से छपरा आगये।

१६ १८ नवम्बर सन १८ १ ई० का राहुन जी तीसरी बार नका पत्थ।

१७ ५ जुलाई सन १९ २ ई० की मन्त आनन्द कौन यापन के साथ योग्य यात्रा पर चन। योरन को व धम प्रचार के लिए जा रह थ। परिस होते हुए २७ जुलाई सन १९ ई० को राहुन जी नन्द पहचे। २७ जुलाई स १३ नवम्बर तक सा तीन मत्तन व गनण म रहे और वहाँ साम्यवानी साहित्य का अध्ययन किया।

१८ मन्त आनन्द जी की नन्द म छोड राहुन जी १४ नवम्बर १९३२ ई० को फिर परिस प च। जमनी भी गये। १६ जनवरी १८३३ ई० को कोनम्पा पट्टे। ० जनवरी सन १९०५ ई० को उँ न भारत के लिए प्रस्थान किया।

१९ सन १९ ई० म शिनाय बार न्हास यात्रा की।

२० शिन्तीय निवन-यात्रा म १८ मई १९ ४ ई० को ल्हासा पढ़े। म यात्रा का उद्देश्य था—प्राचीन मसूत ग्रंथों की शीघ्र। ८ सितम्बर (१९ ४ ई०) तक ल्हासा में २८। मात्रया होन हुए नेवान के रास्त ५ सितम्बर १९२४ ई० को भारत पढ़े।

२१ २ अप्रैल सन १९ ५ ई० को दो बजे गंगा सागर जहाज स कनकता से चले और ५ अप्रैल को दस बजे रण पढ़े। राहुन जी उम समय बौद्ध भिन्

पश्चिमी सभ्यता से परिचित होने के लिए राहुल जी भ्रमन्त आनन्द कौस्तुभ्यायन के साथ सन १९२२ ई० में गए। इस यात्रा में फ्रांस जर्मन और इंग्लैण्ड गये। वहाँ का जीवन उह आवषित न कर सका। उह वहाँ के जीवन में कृत्रिमता प्रतीत हुई। यही कारण था कि उन्होंने योग्य की दूसरी बार यात्रा नहीं की।

य और बौद्ध धर्म के अनुयायी दश जापान का परिचय प्राप्त करने के लिए वहाँ गये थे।

१. जापान में कारिया मन्चूरिया होत हुए ४ सितम्बर सन १९३५ ई० को वे रूस देश का राजधानी मास्का पहुँचे। उस समय उहाने कोट पतलून आदि देशकालोचित वस्त्र धारण कर लिये थे। इस में उहाने खान पान व प्रसंग में किमी प्रकार का यहाँ तक कि मूअर व माँस का भी भोजन करने में सकोच न किया।
२. रूस से रान हान हुए १० अक्टूबर (१९३५ ई०) को लाहौर पहुँचे।
३. सन १९५१ ई० में तीसरी बार तिब्बत गये। व प्राचीन ग्रंथों की खोज के लिए वहाँ गये। तिब्बत से व अनेक ग्रंथों की प्रतिनिधियाँ तथा फाटाफाफ गये।
४. त्रिनायक यात्रा पर राहुल जी १७ नवम्बर सन १९३७ को मास्का पहुँचे। इस यात्रा के इस में १७ नवम्बर १९३७ से १२ जनवरी सन १९३८ तक रहे। २८ नवम्बर १९३७ को लनिनग्राम की प्रसिद्ध औरियटल एस्टीम्यूट देखने गये। वहाँ उनकी मञ्जन व विद्वान आचार्य शचेव्वात्स्की से मेट हुई। उसी समय उनकी गेट सफ्रेटरी मिम गोता में हुई। दोना का एक दूगरे के प्रति जाकपण बढ़ा और दोना का विवाह सम्पन्न हो गया।
५. मित्र वप धारण कर राहुल जी चौथी बार तिब्बत यात्रा की गये। तिब्बत यात्रा समाप्त कर ८ अक्टूबर सन १९३८ ई० का वे कलकत्ता पहुँचे।
६. अक्टूबर सन १९३८ ई० में उहाने फिर भारत की राजनीति में सक्रिय भाग लेना आरम्भ किया। अत बुद्ध समय तक वे यात्रा काय न कर सके।
७. चीनीय वप बाद अप्रैल १९४२ ई० में व अपने ग्राम बनसा गये वपाकि अब पचास वप तक की आयु तक आजमगट जिन में प्रवेश न करने की शय पूरी हो चुकी थी।
८. मई-जून सन १९४३ ई० में उत्तराखण्ड की यात्रा की।
९. किसान सम्मेलन में भाग लेने के लिए भाउ सन १९४४ में वे वजवाहा (आंध्र प्रदेश) गये। (राहुल जी कृत मरी जीवन यात्रा भाग १ २ तथा विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित लेखों के आधार पर)
१०. नवम्बर १९४४ ई० में राहुल जी तीसरी बार रूस पहुँचे। वहाँ २५ मास रहे।
११. १९४३, १९४६ और १९५८ में वे नेपाल यात्रा पर गये।
१२. १९४८ में चीन-यात्रा की। वहाँ वे चार मास रहे।
१३. १९५१ ई० में (२४ वप) तक लका में रहे।
१४. १९६२ ई० (सात महीने तक) राहुल जी चिकित्सा के लिए रूस में रहे। (श्रीमती कमला साकृत्यायन के पत्र त्रिनाक १७ अगस्त १९६५ के आधार पर। पत्रके दिये कृपया देखिये परिशिष्ट)

बौद्ध सोमाइटा न पम प्रकार क विण उ हू अमरिका भत्रा गाता पर उहो म्पी वार नहा गया । अमेरिका का जीवत उ हू योग्य के जीवत म विन प्रतीत नगी हुआ । तका जीर तिअन न अनिरिक्त उ हू गोविषय भुनि म विनेय प्रम था । मर १६ २ १० म प्रथम बार य हग म्पे । म्मा चाा तीत गार और म्म यात्रा का ।

राहुल साहूयायन पूर घुमरक थ । य अपन पर म गारर बनाया बर थ । वान भी ठीक थी । उहें आराम स बरगा पम ही ग था । ब ग य किमी न किमी यात्रा के लिय तलर रहन थ । गापारग म्पयमान (ओगन) निहालन म पात होना थ कि उहाने सन् १६ ८ १० के वाा प्र दक यण का न का विरश यात्रा अक्षय की । उनका नियम था कि र जिग माग स एक गार यात्रा कर तते थ उस ओर स दूगरी वार नगी जात थे । इग प्रकार व अरिष म अरिष प्र शा की यात्रा कर तेम थ । विशेष यात्राओ म उनके लिय धुम्य आवयण के २— तका निवन ओर म्म । भारत म उा बौद्ध तीथ विशेष आकषित करत र । उाोन तगभग समूह भारत की यात्रा की थी कर् प्र शा की ना जनर बाा । पानी यात्रा घीमकायन म सुवकापर लो मक्ता थी । जन निअन यात्रा न गर्मियो म किया करत थे ।

राहुल जी की यात्राये मोश्य आ करती थी । तका यात्रा का नरा म्पय उहृष्य बौद्ध धम सम्ब धी जानकारी प्राप्य करना और पन पान होना था । तका मे व बौद्ध भिा वने अनोवरवाी वने । तका मे उा निअन यात्रा की प्रेरणा मिनी । नि वत स व बौद्ध धम सम्ब धी ग्रथ और सामग्री ताय । उपन थ सामग्रा दिहार म्मिच मागा टी को भेट की ग । रा न जी की आर से य एक अनुपम देन थी ।

दश विअ की यात्राआ न राहुल जी क व्यनित्व का क "का" स प्रभावित किया । उा अमीम अनुभव प्रा त हूए । कष्ट सत्पिणत उारता विचारा की विचारना प्राणि मात्र के प्रति सानुभूति आति उव स्थिति व म्पय तत्व इन यात्राआ के परिणामस्वरूप विरमित हूय थ । विदश यात्राओ न उनक खानपा और रहन रहन को भी प्रभावित किया । भारत म वा यावस्था क प पात व बणव भोजन करन व पर तका म उाोन मछली खाता आरम्भ कर गया । तिअन में उाोन पाा का जीर म्म म सूक्ष्म का मास खाया । योरप क खान पान स भी बोर परना न । गया । विदश यात्रा म व आवश्यकतातुमार देश बालाचित बरभाा रगते व । तिअन यात्राआ म भिअ वप म्पत व पर म्म यात्रा म उाान कोट पार घारण कर लिय थ ।

वि श यात्राओ न सारस अिक उनके राजनाति माव जी विचारा का प्रभावित किया था । विचारपारये उ हू प्रभावित न कर सका । यहा का माप्रापवाणी वानावरण उनकी म्पद प्रशुति क प्रतिरत था । दश का जीवन उ हू वृषिम प्रतीत आ और कृत्रिमता म उा स्वाभाविक वि था । म्मक विदरीत म्म का

जीवन उड़ विपण गचक लगा। वहाँ के जीवन को उड़ोने बनी निकटता से दखा। वहाँ के जीवन में उड़ प्रतिभता का अभाव प्रनीत हुआ। जिन विचारा की बरपना उड़ोने अपनी पुस्तक 'वार्सवी सदी' में की है वहाँ के जीवन में उड़ प्रत्यक्ष लिखाई दी। यही कारण था कि वहाँ के जीवन में राहुल जी को विशेष आकर्षित किया। वहाँ के जीवन का अपन विचारो व साथ साम्य पाकर उड़ोने इस के माकमवात का जना किया। 'माकमवात' न उनके जीवन को एक नवीन माय किया। भारत में उड़ोने विमानों और मजदुरा का पक्ष लता आरम्भ किया। वे किसाना और मजदुरो व साथी बन गय और उनक लिए आन्दोलना में भाग लने गय। विदेश-यात्राओं न विशेषकर रूस का यात्रा न उनकी हृदयान्तिता से मुक्त कर दिया। उनका दृष्टिकोण बनानिफ बन गया। व इश्वरवादी न अनीधनरवाणी तथा भौतिकवादी बन गय। विन्ना भमन ने ही उनक 'व्यक्ति' का प्रगति की ओर उड़ मुक्त किया।

यात्राओं न 'व्यक्ति' के माय उनकी लखन कला की भा अनुप्राणित किया। वीन निम्नु बन जान पर उड़ोने महात्मा बुद्ध व उपदेशो का सोचो तक पठवाना चाहा। इस उष्य का दिद्धि व लिए उड़ोने रचना काय को माधन बनाया। नका व जीवन के सम्बन्ध में उड़ोने 'निक पत्रा और मासिक पत्रिकाओं के लिए लेख लिखे। उनके य गय मासिक पत्रिका 'सरस्वता और 'निक पत्र विश्वमित्र' में प्रकाशित गय। एही गया से उनके साहित्यिक जीवन का आरम्भ होता है। इस प्रकार विश्व यात्राओं न उनकी लेखनी का नवीन चनना गी। उड़ोने नका के बौद्ध धर्म से प्रभावित हाकर बौद्ध धर्म सम्बन्धी रचनाय का। महात्मा बुद्ध क जीवन से सम्बन्धित बौद्ध चर्चा नापक पुस्तक का रचना का। अनक बौद्ध धर्म का सम्पादन किया और अनुवात भी किया।

उड़ोने जिस देश की यात्रा की वहाँ में सम्बन्धित जीवन पर पुस्तक भी अवश्य लिखा। 'नका' निरत में सवा वय 'मरी माह्य यात्रा 'मरी ति'वत यात्रा जापान ईरान, इस में 'पचीस मास'—उनकी मुख्य यात्रा रचनायें हैं। जिस देश की व यात्रा करत य व की जीवन को वे बनी सूक्ष्मता से दखा करते थ। वहाँ प्राप्त अनुभव उड़ रचना काय क लिए बाध्य कर देत थ। विदेशों व जीवन व साथ साथ वर्तु की राजनीति ने भी उड़ें अपनी ओर आकर्षित किया। इस के आरम्भवात न उड़ अपन रग में रण किया। इस सम्बन्ध में राहुल जी न लिखा है— 'सोवियत मर लिए साम्यवा का साकार रूप था सोवियत की घुराई करके ओ अपने को साम्यवाणी या साम्राज्यवाणी वहे उस में बचन या बवकूप छोडकर और युद्ध नहीं ममक गचना।' सोवियत याय सावियत कम्युनिस्ट पार्टी का इतिहास कम्युनिस्ट क्या चाहते हैं?, साम्यवा ही क्या?—आदि ग्रन्थो के लिए सामग्री राहुल जी को धर्म के राजनीतिक जीवन से प्राप्त हुई। माकमवाणी

नेताओं की जीवनियाँ भी उहोने निरी — स्तानिा लेनिा काग मागर्न आदि ।

उपयुक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि देश विदेश की यात्राओं ने उनकी धर्म विषयक धारणाओं राजनीतिक विचारों तथा साहित्यिक मायमाओं का प्रभावित किया । राहुल जी यदि विदेश यात्रायें न करत तो निम्न दृग् परिमाण में रचना काय न कर पाते । घुमवकडी राहुल जी के लिए बरतान सिद्ध हुई ।

राहुल साहूट्यायन और धम

धम क्या है ? — इस प्रश्न पर बहूधा वाद विवाद तथा शास्त्राय होते रह हैं । परिणामस्वरूप अनेक मत मतान्तर यहाँ जन्म लते रहे हैं । इस युग में सबत्र धम सम्प्रधी परिभाषायें समय और परिस्थितियाँ क अनुमार बन्सनी रही हैं । आजकल धम की परिभाषा के विषय म अतिन मुद् उतती बात वाली मोकोक्ति चरिताथ हो रही है । धम सम्प्रधी परिभाषाओं को मुख्य रूप स दो वगों मे विभाजित किया जा सकता है—(१) रुदियाँ तथा (२) बानिक । रुदियाँ परिभाषाय ईश्वर क अस्तित्व को स्वीकार करती हैं और ईश्वर प्राप्ति के साधनों का निर्देश करती हैं । बानिक परिभाषायें भौतिक पन्थों के अस्तित्व तर्क चिंतन क्षत्र को सीमित करती हैं ईश्वर की सत्ता को तय की कसौटी पर कसा जाता है ।

आजकल प्रत्येक वस्तु को बानिक कसौटी पर परखा जाता है । बानिक दृष्टिकोण के अनुसार धम को किसी जानि बत वग पन् इत्यादि क लिए उचित ठहराया हुआ 'यवसाय या 'यवहार कस्य' माना जाता है । टिनी साहित्यकारों में धम सम्बन्धी बानिक दृष्टिकोण रखने वालों में राहुल साहूट्यायन एक है । वे मानवता के अतगत कस्य पात्रन को मनुष्य का सबसे बन् धम मानते हैं । शप चीजों को ये निरापावण समभत हैं । पर तु वस निष्कप पर पहुचने से पव व कट्टर ईश्वरवाी रहे और उ होने अनक धम आजमाये । राहुल जी ने धम क क्षत्र म अनेक प्रयोग किये । उनकी धम सम्बन्धी धारणाओं क विकास स परिचित होना आवश्यक है ।

राहुल जी की बाल्यावस्था का अधिकांश उनकी ननिहाल म बीता था । राहुल जी के नाना रामशरण पाठक की यवावस्था और प्रौढावस्था एक सनिक के रूप मे व्यतीत हुई थी । इस कारण पाठक जी धम कम की जोर विशेष रचि न रख सके । अवकाश प्राप्त करने पर व वणव धम^१ के पक्के अनुयायी

^१ सक्षिप्त हिंदी शास्त्र सागर पृ० ५० नागरी प्रचारिणी सभा

वणव धम— वणव धम या वणव सम्प्रथाय का प्राचीन नाम भागवत धम या पंच रात्र मत है । इस सम्प्रथाय क प्रधान उपास्य देव वामुदेव हैं जिन्हें पान गति बच वाय ऐश्वर्य और तेज इन छ गुणों से सम्पन्न होने के कारण भगवान या भगवत कहा गया है और भगवत के उपासक भागवत कन्वते हैं । दसवीं स तेरहवीं चौदहवीं शती तक इस प्रकार भक्ति का आदोसन

बन गया। राहुल जी अपने पिता के सम्बन्ध में दस वर्ष की आयु में आय थे। उनके पिता धार्मिक बनि व मनुष्य थे। पूजा व बड नियमों का पालन करने के कारण गाँव वाले उन्हें 'पुजारी' कहते थे। वे हनुमान बाहुन और रामायण का पाठ करते थे और शंकर की पूजा किया करते थे। पक्के आस्तिक होत हुए भी बाबा वाचस्पति प्रमाणम्' का अवहेलना करने में व समय थे। ब्राह्मणों की बट्टर पथी सामाजिक परम्परा के प्रतिबल व अपने निस्संतान हरवाहे 'चिन्गी चमार के मरने पर उसे गंगा-तीर जलाने के लिए ले गये। पुरानी प्रथाओं के प्रति व अब विश्वासो नहीं थे।

राहुल जी के नाना और पिता धर्म कथ में अधिक बट्टर तथा रुढ़िवादी नहीं थे। कहा जा चुका है कि उनके नाना बष्णव होते हुये भी अपने नाती 'वेदार' के लिए मछली माँस पकाने में सकोच नहीं करते थे। विचारों की यह स्वतंत्रता आगे चल कर राहुल के जीवन में भी प्रस्फुटित हुई। वास्तव में राहुल जी के धर्म सम्बन्धी विचारों में स्वतंत्रता का बीजारोपण उनके पिता और नाना के प्रमाणत स्वतंत्र विचारों द्वारा ही हुआ।

राहुल जी व प्रारम्भिक धर्म सम्बन्धी विचारों पर अगला प्रभाव बाबा परम हंस का पडा। बाबा परमहंस बनला के सीमांतीय गाँव उमरपुर में मगध नदी का पार कुटिया बनाकर रहते थे। दूर दूर तक के लोगों का उनके प्रति आकर्षण था। राहुल के पिता जी बाबा परमहंस के प्रति बड़ी श्रद्धा रखते थे। हर चीजे पौधवे चिन्तन के दशनाथ वहाँ पहुँचते थे। राहुल जी भी अपने पिता के साथ बाबा परमहंस के पास जाने लगे। उसी कुटिया में एक बाबा हरिकरणदास भी रहते थे। उन्होंने राहुल जी को वेदान्त का उपदेश दिया। वेदान्त की ओर उनकी रुचि बढ़ती गई। सन १९१० ई० में राहुल जी जब १६ वर्ष के थे, उनके वेदांती बन गये थे। उन दिना वेदान्त

दक्षिण में शास्त्रीय रूप धारण करके तथा आध्यात्मिक पथ में उड़ हो कर पुन उत्तर की ओर आया और चौहवां शताब्दी से उन्नीसवीं शताब्दी तक प्रबल बग के साथ देश के विस्तृत भूभाग में महाराष्ट्र, गुजरात, पंजाब, मध्य प्रदेश, मगध, उत्तर आसाम और बंग देश में फैलकर व्यापक लोकधर्म बन गया। उत्तर भारत में इसका नवीन रूप में प्रचार करने वाले सबसे प्रथम और सबसे अधिक शक्तिशाली स्वामी रामानन्द हुये। जितने आध्यात्मिक दृष्टि से रामानन्द के विनिष्ठाद्वैतवाद का ही मानते हुए भक्ति का पथक सम्प्रदाय स्थापित किया जिसमें दक्षिणात्य श्री बष्णवों की तरह बठोर नियम नहीं था। लक्ष्मी नारायण के स्थान पर उन्होंने नीताराम को अपना उपास्यदेव बनाया।—हिंदी साहित्य कोष, पृ० ५३६-५३९ स० धीरेन्द्र वर्मा।

- वेदान्त का धार्मिक अर्थ है वेद का अन्त अर्थात् अन्तिम भाग। वेदों के अन्तिम भाग उपनिषद नामक ग्रन्थ है अतः उनको वेदान्त कहा जाता है। वेदान्त का मुख्य सिद्धान्त ब्रह्मवाद है। ब्रह्म और जगत का सम्बन्ध ब्रह्म और जीव का सम्बन्ध, मुक्ति का भाग आदि विषय वेदान्तियों की धर्मों के मुख्य विषय रहे हैं। हिंदी साहित्य कोष पृ० ७३८, स० डॉ० धीरेन्द्र वर्मा।

और चराम्य के अतिरिक्त - ७ दूसरा घाँसेप और भ्रमहा सगनी था। य तीर्ती होने के कारण देवताओं की भी उनके नियम आरक्षण में रगती थी। उस समय उनका विचार समृद्ध और उगा न पट्टर में जाती हो जाता था।

राहुल जी के दिन रोम फिर परिवर्तन आया। य यथासाक्ष शिवभक्त बन। बत्तीस मणियाँ का उगा न १५ का उगा न म पडा रहुता और गिर का भम्म त्रिपुण रात की सा जाग पर ही मितता। म्नाप्यायी के वृत्त में अध्याय तथा महिम्न स्तोत्र के पारायण करत करत उगा याग में गय। मन १८११ ०० तक राहुल जी पहले शिवभक्त थे।

मन १६११ ०० में ही राहुल जी ने एक नया अनुभव प्राप्त किया। 'उग्र मन्त्र के प्रति उनकी रचि हो गई। उग्र मन्त्र जान के लिए उ नगागा स्वामी पूषानन्त्र के पाम जाने गे। राहुल जी के आग्रह पर स्वामी जा न बननाया रि पूरे नियम के साथ मन्त्र का नौ उपाय जप करन पर तुर्गा गिन् वाहिनी का गा रात उशन हागा वह वर ग्रहि कन्गा फिर घन बन बुद्धि विद्या जा माँगना हो माँगना। राहुल जी ने आग्रह नि नत्र तुगा का जप किया। पर जगन्मबा के उपाय न हय। अपनी म्म जमफनना पर राहुल जी का बडा तुग तुगा जोर अधिक जीना व्यथ समझ कर उा न प्रन्ने के बीज का लिए। मरत मग्ने घन दूमर नि होश जाया।

मन १६१२ ०० में राहुल जी परसामन्त्र के महत्त लछमनदास के सम्पर्क में जाय। महत्त जी ने राहुल जी का वणव बना लिया। परसा के मन उत्तराधि जारी के स्थान पर कन्त्र नाम वन्त्र कर कन्त्रा वणव नाम रामउन्त्र रखा गया। उस मन्त्र में राहुल जी चरामी तपस्वी साध का नहा अपिनु एक सुकुमार राजकुमार का जीवन बितान लग। राहुल जी का वणव अग्रश्य बना लिया गया था पर म्म आर उनकी रचि अब भी न थी। उस प्रसंग में व स्वयं लिखते हैं—
पूजा-पाठ की तरफ मरा मन न गया था। सवर स्नान करके कोठरी में जाता। लोग समभन 'पुजारी जी पूजा पाठ में गे हैं और यहाँ पुजारी जी दरवाजा बन्द कर बिन्दरे पर खूब पर फना म्म न्य है जयवा कोई उपयास या सरस्वती का अंक पन्त्र हैं। अभी तत्र में जाय समाज के मूर्ति विराधी प्रभाव में नहा आया था तो भी मर लिए शात्रिग्राम के वह कान कान गोलमटोल चिकन पत्थर निरे पत्थर थे। बगार की तरह उन पर चन्त्र और तुलसीन्त्र भी डान देता। जल्दी पन्ना हटा दन पर डर या सन्त्र होने का म्मनिय भीतर ही वगा एक शात्रिग्राम की दूमर स नगाया करता। २

१ शिवभक्त—शिव का परमश्वर मानन वाला या शक् या शिवभक्त कथा जाता है और उनका धर्म को शिवमत्त। शिव का अर्थ है शुभ या कयाग। हिन्दी साहित्य कोश प ७७ सम्पा० डा धीरेन्द्र वर्मा।